II. CORE COURSE [CCHIN102]: (क्रेडिट: सैद्धान्तिक -04, ट्यूटोरियल -01)

Marks: 30 (MSE: 20Th. 1Hr + 5Attd. + 5Assign.) + 70 (ESE: 3Hrs)=100 Pass Marks (MSE:17 + ESE:28)=45

प्रश्न पत्र के लिए निर्देश

मध्य छमाही परीक्षा :

*20 अंको की परीक्षा में प्रश्नों के दो समूह होंगे। **खण्ड 'A'** में पाँच **अत्यंत लघु उत्तरीय** 1 अंक के **अनिवार्य** प्रश्न होंगे। **खण्ड 'B'** में 5 अंको के पाँच **विषयनिष्ठ/ वर्णनात्मक प्रश्नों** में से किन्हीं तीन के उत्तर देने होंगे।*

छमाही परीक्षा :

*70 अंको की परीक्षा में प्रश्नों के दो समूह होंगे। **खण्ड 'A' अनिवार्य है** जिसमें दो प्रश्न होंगे। **प्रश्न संख्या 1** में पाँच **अत्यंत लघु उत्तरीय** 1 अंक के प्रश्न होंगे। **प्रश्न संख्या 2 लघु उत्तरीय** 5 अंक का प्रश्न होगा। **खण्ड 'B'** में 15 अंको के छः **विषयनिष्ठ/ वर्णनात्मक प्रश्नों** में से किन्हीं चार के उत्तर देने होंगे।*

नोट : *परीक्षा में पूछे गए प्रत्येक प्रश्न में उप–विभाजन हो सकते हैं।*
20 अंकों की दो आंतरिक परीक्षाओं में प्राप्त अधिकतम अंक का चयन होगा।
05 अंक उपस्थिति एवं 05 अंक सेमिनार, एन. एस. एस. एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभागिता पर।
(Attendance Upto75%, 1mark; 75<Attd.<80, 2 marks; 80<Attd.<85, 3 marks; 85<Attd.<90, 4 marks; 90<Attd, 5 marks).

साहित्येतिहास, हिंदी साहित्य का आदिकाल और मध्यकाल

सैद्धान्तिक : 75 व्याख्यान, ट्यूटोरियल : 15 व्याख्यान

इकाई I - इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास, हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, हिंदी साहित्येतिकास काल विभाजन एवं नामकरण और सीमांकन।

इकाई II - **आदिकाल** – सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो काव्यपरंपरा और पृथ्वीराजरासो, पृथ्वीराजरासो की प्रामाणिकता।

इकाई III - **भक्तिकाल** – प्रेरक परिस्थितियाँ, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, निर्गुण काव्य और प्रमुख संत कवि, सूफी काव्य(प्रेमकाव्य) एवं प्रमुख सूफी कवि, प्रेमकाव्य परंपरा और मलिक मोहम्मद जायसी।

इकाई IV - **सगुण काव्यधारा** – रामकाव्यधारा और प्रमुख कवि,कृष्णकाव्यधारा और प्रमुख कवि भक्तिकाल : हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग।

इकाई V - **रीतिकाल** – प्रेरक परिस्थितियाँ, नामकरण और सीमांकन, रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ तथा विभिन्न काव्यधाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त) और रीतिकाल के प्रतिनिधि एवं महत्वपूर्ण कवि।